Click here to go back

अथ चंद्र आवाहन मंत्रः>

ओं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतस्सोम वृष्णियम्। भवा वाजस्य संगथे। अफ्सुमे सोमो अब्रवीदंतर्विश्वानि भेषजा। अग्निं च विश्वशंभुवमापश्च विश्वभेषजीः। गौरी मिमाय सलिलानि तक्षत्येकपदी द्विपदी सा चतुष्पदी। अष्टापदी नवपदी बभूवुषी सहस्राक्षरा परमे व्योमन्। ओं अधिदेवता प्रत्यधिदेवता सहिताय सोमाय नमः॥ इति चंद्र आवाहन मंत्रः॥

For Qualitative Predictions & Potential Remedies visit:
www.astrovidya.com

Click here to go back